बागेश्री अंग के किंचित अप्रचलित रागों का शास्त्रीय स्वरूप

शोधार्थी
पूनम रानी
संगीत विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

निर्देशिका
प्रो. शर्मिला टेलर
संगीत विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

प्राचीन काल से लेकर अब तक विद्वानों ने कुल कितने रागों की रचना की, उनकी निश्चित संख्या ज्ञात करना असंभव तो नहीं है, परंतु दुरूह कार्य अवश्य है। इन असंख्य रागों में कुछ राग ऐसे हैं जो किन्हीं विशेष घरानों में प्रचलित है, तो कुछ ऐसे हैं जो अप्रचलित हो गये हैं। इसी समस्या से शुरूआत होती है प्रचलित तथा अप्रचलित रागों की। प्रचलित राग तो फिर भी संगीत के विभिन्न कार्यक्रम एवं मंच प्रदर्शन में सुनने को मिल जाते हैं, परंतु ऐसे क्लिष्ट राग जो अप्रचलित रागों की श्रेणी में आ गए हैं, सुनाई भी कठिनाई से ही पड़ते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा 'बागेश्री' अंग के कुछ ऐसे ही अप्रचलित रागों की जानकारी प्रस्तुत की गई है, जिनको लोग कम गाते–बजाते हैं तथा जिनके बारे में प्रमाणिक सामग्री बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है।

'रागांग' की दृष्टि से प्रस्तुत 'बागेश्री' अंग के संदर्भ में गुणीजन भिन्न–भिन्न मत रखते हैं। कुछ विद्वान 'बागेश्री' को काफी अंग के अंतर्गत मानते हैं, तो कुछ कान्हड़ा अंग के अंतर्गत मानते हैं और कुछ विद्वानों ने 'बागेश्री' को एक स्वतंत्र रागांग के रूप में स्वीकार किया है। राग– वर्गीकरण' की इस पद्धति को सुव्यवस्थित ढंग से प्रचार में लाने का श्रेय पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी के शिष्य पं. 'नारायण मोरेश्वर खरे' जी को जाता है। खरे जी द्वारा कथित 30 रागांगों में से ही एक है – 'बागेश्री' अंग। अतः शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत 'बागेश्री' अंग को एक स्वतंत्र अंग मानते हुए बागेश्री अंग के अंतर्गत आने वाले किंचित अप्रचलित रागों का शास्त्रीय परिचय देने का प्रयास किया गया है जो कि निम्नवत् हैरू–

(1) राग – औडव बागेश्री (पुराना चंद्रकोंस)

प्रस्तुत राग 'औड़व बागेश्री' बागेश्री अंग का एक अप्रचलित राग है। यह राग बागेश्री का औड़व रूप है। संभवतया इसीलिए इसका नाम औड़व बागेश्री रखा गया हो। शास्त्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इसी राग को पहले चंद्रकंस कहा जाता था। यह राग दो प्रकार से गाया जाता है। पहले प्रकार में गंधार, निषाद कोमल तथा धैवत शुद्ध है और दूसरे प्रकार में गंधार, धैवत कोमल तथा निषाद शुद्ध है। इसके दोनों ही प्रकारों में ऋषभ–पंचम वर्जित है।

यहाँ काफी थाट से उत्पन्न औड़व बागेश्री अथवा प्राचीन चंद्रकोंस का वर्णन किया जा रहा है। इसमें गंधार, निषाद कोमल और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में ऋषभ–पंचम पूर्ण रूप से वर्जित है। अतः इसकी जाति औड़व–औड़व है एवं गायन समय मध्यरात्रि माना जाता है। इसका आरोह व अवरोह इस प्रकार है –

आरोहरू– सा ग म ध नि सां।
अवरोहरू – सां नि ध म ग म ग सा।
राग का मुख्य अंगरू– ''म ग सा, ध़ नि़ सा म, गम गम म ग सा।''

पूर्वांग में मालकंस और उत्तरांग में बागेश्री के मेल से इस राग का स्वरूप स्पष्ट होता है।यथा–"सा, नि़ ध़, ध़ नि़ सा म ग म ग सा। सा ग म ग म ग नि़ सा। सा ग म ध, ध म ग, ग म ग सा। ग म ध नि ध म ध नि ध म ग म ग सा। सा ग म ध नि सां। सां नि ध नि सां, सां नि ध म ध नि ध, म ग म ग सा। म ध नि सां, ध नि सां गं सां, सां गं मं गं मं गं सां, सां नि ध, म ध नि ध, म ग म ग सा।"

(2) राग – बागेश्री बहार

प्रस्तुत राग 'बागेश्री बहार' काफी थाट के अंतर्गत आता है। जैसा कि नाम से ही विदित होता है कि इस राग की उत्पत्ति राग 'बहार' में 'बागेश्री' का मिश्रण करने से हुई है। इसमें गंधार कोमल, दोनों निषाद (नि, नि) व शेष सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग की जाति औड़व–संपूर्ण (वक्ररूप से) और गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

राग का मुख्य अंगरू– ''ध नि ध म, प म ग म, रे सा।
आरोहरू– सागम, ध नि ध सां।
अवरोहरू– सां नि ध म, प गप म रे सा।''

इसमें मध्यम व पंचम दोनों स्वरों पर न्यास रहता है। इन्हीं दोनों स्वरों से प्रस्तुत राग में बागेश्री से बहार तथा बहार से बागेश्री का सुंदर मिश्रण किया जाता है। यथा–'म नि ध म, प प म ग म, सां नि ध म' इस प्रकार मध्यम पर न्यास होता है तथा 'म नि ध नि सां नि प, सां नि प, रें सां नि ध नि प' की भाँति पंचम पर न्यास होता है। प्रस्तुत राग का चलन कुछ इस प्रकार रहता है – सा रे सा, नि़ ध़ सा, सा म, म प ग म, म नि ध म, म नि ध नि सां, सां नि ध म, म प पग म रे सा, नि ध नि प, म ग म, म नि ध म मग, म ग रे सा।

(3) राग–मोटकी (कोमल बागेश्री)

यह भैरवी थाट का राग है। इसमें ऋषभ, गंधार, निषाद कोमल, दोनों

धैवत (ध, ध) व शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसकी जाति संपूर्ण–संपूर्ण है। इसके आरोह में ऋषभ और अवरोह में धैवत दुर्बल है। इसमें दोनों धैवतों का प्रयोग होता है। कुछ लोग इसे 'मोदकी' भी कहते है। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षड्ज है। इसके उत्तरांग में कहीं–कहीं बागेश्री अंग दिखाई पड़ता है, जो कि भला प्रतीत होता है। इसे बहुत कम लोग जानते हैं, इसलिए इसके स्वरूप के विषय में गायकों में मतभेद है। अतः यह एक अप्रचलित राग है। प्रस्तुत राग के एक लक्षणगीत में बागेश्री अंग का मिश्रण इस प्रकार बताया गया है –

स्थाई – "गावत सो मोटकी, करे मिश्रमेल सों भैरवी हरप्रिया
नि सा ग म प ध नि प ध ग रे सा रे प ग।

अंतरा – बागेश्री अंग आसावरी संग, अनुलोम अवरूद्ध मध्यम करत अंश।''

उपर्युक्त संदर्भ के अनुसार ही इस राग का आरोह–अवरोह इस प्रकार है –

आरोहरू– नि़ सा ग म प ध नि सां।
अवरोहरू– सां ध नि ध प म ग रे सा।

(4) राग–बागेश्री कान्हड़ा

राग 'बागेश्री कान्हड़ा' काफी थाट से उत्पन्न राग है। यह राग 'बागेश्री' और 'कान्हड़ा' के मेल से बना है। इसमें गंधार–निषाद कोमल तथा अन्य सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षड्ज है। इसकी जाति संपूर्ण–संपूर्ण है तथा गायन समय मध्यरात्रि है। इस राग का आरोह–अवरोह व पकड़श्री जयसुखलाल त्रि. शाह द्वारा रचित 'कान्हड़ा के प्रकार' पुस्तक में पृष्ठ संख्या 110 पर इस प्रकार दिया गया है –

आरोहरू– सा, रे ग, सा रे प, म प, ग, म, ध, नि सां।
अवरोहरू– सां, नि ध नि प, म प ध ग, म रे, सा।
पकड़रू– रे रे ग, सा रे, प, म प, ग, म रे सा, म ध नि ध, नि प, म प ध ग, म रे, सा।

प्रस्तुत राग में 'बागेश्री' के 'ध़ नि़ सा म' व 'म ध नि ध म' और कान्हड़ा के 'नि प' व 'ग म रे सा' स्वर–समुदाय का सुंदर मिश्रण किया गया है। इसमें गंधार स्वर का प्रयोग अवरोह में बागेश्री अंग दिखाते समय 'ध, ग, म प ध ग, म ग रे सा' इस प्रकार सरलता से और कान्हड़ा अंग दिखाते समय 'नि ध नि प, ग म रे सा' की भांति वक्रता से किया जाता है।

'गम म ध–निध ध निधप' यह स्वरावलि राग 'शहाना' में भी ली जाती है। अतः इससे बचने के लिए बागेश्री कान्हड़ा में 'म ध नि ध म' स्वर संगति का अधिक प्रयोग करना चाहिए। "किंतु तार सप्तक में ऋषभ से ' रेनि सां नि संनि नि ध नि प गम–म ध नि ध गम–म रे सा' इस प्रकार उतरना चाहिए। कुछ अंशों में यह राग कौशिक कान्हड़ा के सदृश ही चलता है, फिर भी स्वर संगति भेद व चलन भेद से दोनों रागों में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है।

प्रस्तुत राग 'बागेश्री कान्हड़ा' का चलन कुछ इस प्रकार है – "सा नि़ ध़ नि़ सा, ग रे सा। सा ग म ग म रे सा। म ध नि प म प ग म रे सा। ग म ध नि सां, सां नि प म प ग म रे सा, सां नि प म प ध नि सां सां नि प म ध नि प म प ग म रे सा। म ध नि सां सां रें नि सां गं मं रें सां सां नि प म प ग म रे सा।"

(5) राग कौंसी कान्हड़ा (बागेश्री अंग)

प्रस्तुत राग 'कौंसी कान्हड़ा' काफी थाट से उत्पन्न बागेश्री अंग का एक अप्रचलित राग है। इस राग के अनेक नाम प्रचार में हैं, जैसे – 'कौशिक' या 'कौशिकी' व 'कौंसी' तथा 'कौशिक कान्हड़ा' व 'कौंसी कान्हड़ा' आदि। अनेक नाम से हैं। यह दो प्रकार से गाया जाता है। एक मालकौंस अंग से और दूसरा बागेश्री अंग से। इसके दोनों ही प्रकार रंजक है। नाम से साम्य होते हुए भी दोनों ही प्रकार स्वर और थाट भेद की दृष्टि से भिन्न–भिन्न है।

वर्तमान में मालकोंस अंग का कौंसी कान्हड़ा ही अधिक प्रचार में है, परंतु मान्यता दोनों प्रकारों को है। मालकोंस अंग के कौंसी कान्हड़ा में भी पूर्वांग में कभी–कभी बागेश्री की छाया आती है, किंतु मंद्र सप्तक में कोमल धैवत लगते ही इसकी छाया दूर हो जाती है। जहाँ तक बागेश्री अंग के कौंसी कान्हड़ा का प्रश्न है, यह प्रकार अब प्रचार में नही ंके बराबर है। इसमें गंधार, निषाद कोमल तथा अन्य सभी स्वर शद्ध लगते हैं। कहीं–कहीं इसके आरोह में शुद्ध निषाद का प्रयोग भी किया जाता है। इसका वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इसकी जाति वक्र–संपूर्ण है एवं गायन समय मध्यरात्रि है। यह राग 'बागेश्री' तथा 'कान्हड़ा' के मिश्रण से बना है। इस राग का आरोह–अवरोह व पकड़ 'अभिनव गीतांजलि', भाग–3, में पृष्ठ संख्या 252 पर इस प्रकार मिलता है –

आरोहरू– "सा, म, म प, ग, म, ध, प ध, नि प, ध नि रें सां, नि सां।
अवरोहरू– सां, ध, नि प, म प, ध नि ध प, ध म, प ध ग, म, रे सा।
पकड़रू– प म, प ध, ग, म रे, सा, रे नि़ सा, ध, ध, नि प, म प, ध, ग, म रे, सा।
मुख्य रूप से इस राग का चलन इस प्रकार रहता है –
"नि प, म प, नि म प ग, म, रे सा' अथवा 'प म, प ध ग, म प, ग म, रे सा, ग म ध, नि प, म, प ध, म, प ग, रे ग, म ग, रे सा'।"

संदर्भ ग्रंथ सूची :

पटवर्धन, विनायक नारायण. (1964).राग विज्ञान,भाग–7. पुनेः संगीत गौरव ग्रंथ माला. पृ.सं. 146

मिश्र, शंकरलाल. (1998).नवीन ख्याल रचनावली.चण्डीगढ़ः अभिषेक पब्लिकेशन्स. पृ. सं. 367

पटवर्धन, विनायक नारायण. (1964).राग विज्ञान.भाग–7, पुनेः संगीत गौरव ग्रंथ माला. पृ. सं. 167

अली, राजा नवाब. (1974).मारिफुन्नग़मात, प्रथम भाग. उत्तर प्रदेशः संगीत कार्यालय हाथरस. पृ. सं. 225

मिश्र, शंकरलाल. (1998). नवीन ख्याल रचनावली.चण्डीगढ़ः अभिषेक पब्लिकेशन्स. पृ. सं. 421

झां, रामाश्रय. (2000).अभिनव गीतांजलि,भाग–3.इलाहबादः संगीत सदन प्रकाशन.पृ. सं. 252